हिन्दी भाषा की व्यथा

एस.के. चौहान,
वरिष्ठ प्रबन्धक , परिकल्प विभाग,
टीएचडीसी, ऋषिकेश

हिन्दी भाषा के दर्द की किसे यहां परवाह।
एक अंग्रेजी वर्ष में, एक हिन्दी सप्ताह।।

धड़कन में ब्रिटेन है मुंह पर भारत महान।
ऐसे में हो किस तरह हिन्दी का उत्थान।।

निज भाषा, निज संस्कृति से कर लिया हमने परहेज।
गोरों से आगे बढ़ गये हम काले अंग्रेज।।

स्वाभिमान को बेचकर जारी जहां उत्सव।
है फिजूल उनके लिए, निज भाषा प्रस्ताव।।

अंग्रेजी के मोह में खोई हमने निज पहचान।
घर का रहा न घाट का ज्यों धोबी का श्वान।।

भारत सरकार की सोच पर कैसे हो विश्वास।
अंग्रेजी को राजसुख, हिन्दी को बनवास।।

निज भाषा, निज संस्कृति से यदि रहा यूं ही विद्वेष।
आने वाली पीढियां ढूंढेगी अवशेष।।

हिन्दी भाषा का खाकर जो गायें अंग्रेजी गीत।
हे ईश्वर! सौ दुश्मन मिले, मिले न ऐसा मीत।।

हिन्दी भाषा को यदि हमें दिलाना है सम्मान।
लिखने-बोलने में स्वयं का मत समझों अपमान।।

****